Tc.No. : GUJHIN00722

पेज: 4, मुल्य 1 रु.

दैनिक

क्रांति समय

संस्थापक / संपादक : सुरेश मौर्या

E-mail: krantisamay@gmail.com, www.krantisamay.com

वर्ष: 2 अंक: 193 , 19 दिसम्बर, मंगलवार 2017, सूरत, हिन्दी दैनिक मो. 9879141480 4 ओ ब्लॉक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष, सचीन रेल्वे स्टेशन के पास, सूरत-गुजरात

सार समाचार

आंध्र प्रदेश से दिल्ली लाए जा रहे 820 मोबाइल चोरी

नई दिल्ली। आंध्रप्रदेश से ट्रक में भरकर दिल्ली लाए जा रहे 820 मोबाइल रास्ते में ही चोरी हो गए। 9 दिसंबर को मिली शिकायत पर कापसहेड़ा थाने की पुलिस मामला दर्ज करके ट्रक के चालक और हेल्पर सहित तीन लोगों से पूछताछ कर रही है। पुलिस के मुताबिक, फरीदाबाद निवासी राहुल फास्ट ट्रक टीपीटी कंपनी के मालिक हैं। उनकी गाड़ियां ब्लू डार्ट कंपनी में चलती हैं। 9 दिसंबर को ट्रक चालक चंद्रवीर, सत्येन्द्र और हेल्पर मोनू राइसिंग स्टार मोबाइल इंडिया लिमिटेड आंध्रप्रदेश से पंद्रह हजार दो सौ मोबाइल लेकर चले थे। ट्रक 13 दिसंबर को एमएस डिलीवरी के गोदाम, कापसहेड़ा पहुंचा। यहां इन तीनों कर्मियों के सामने ही मोबाइल की गिनती की गई, जिसमें 820 मोबाइल कम निकले। इसके बाद ब्लू डार्ट के कर्मचारी दिनेश ने मामले की जानकारी मालिक राहुल को दी। राहुल ने सौ नंबर पर कॉल कर पुलिस बुला ली। राहुल के बयान पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। शक के दायरे में आए तीनों कर्मचारी लंबे वक्त से राहुल के साथ काम कर रहे थे, जो अक्सर माल एक राज्य से दूसरे में पहुंचाते थे।

बिजनेसमैन के घर से कैश ज्वेलरी लेकर नौकर फरार

नई दिल्ली। साउथ दिल्ली के ग्रेटर कैलाश पार्ट-2 में बिजनेसमैन का नौकर कृष्णा उनके घर से चोरी कर फरार हो गया। चितरंजन पार्क थाना पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। चोरी हुए सामान में डायमंड के दो सेट, सोनू की अंगूठी, चूडी और एक लाख 75 हजार नकद शामिल हैं। पुलिस के मुताबिक, कपिल गर्ग एस ब्लॉक में रहते हैं, परिवार के सभी लोग नरवाना गए थे। इस बीच नौकर चोरी कर फरार हो गया।

किडनैपर से मिलकर तीन लाख की फिरौती मांग रहे दो दरोगा अरेस्ट

गोरखपुर। किडनैपर से मिलकर किडनैप्ड छात्र की रिहाई के लिए तीन लाख रुपए की फिरौती मांग रहे गोरखपुर में तैनात दो दरोगा अरेस्ट कर लिए गए हैं। दोनों दरोगा गोरखपुर के उरुवा थाने पर तैनात बताए जाते हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार यह एक्शन सीधे एसएसपी के निर्देश पर हुआ। बिहार के गोपालगंज के एक कॉलेज में पढ़ने वाले लड़के को उसका दोस्त अफजल धोखे से गोरखपुर ले आया। यहां तैनात अपने परिचित दो दरोगाओं से उसने सम्पर्क किया और उन्हें अपनी साजिश में शामिल कर लिया। इसके बाद छात्र की रिहाई के नाम पर उसके परिवारीजनों से फिरौती मांगी जाने लगी। बताते हैं कि परिवारीजनों के जरिए किसी तरह रविवार को यह बात गोरखपुर के एसपी ग्रामीण को पता लग गई। उन्होंने एसएसपी को बताया और उनकी हरी झंडी मिलने के बाद किडनैपिंग के आरोपी अफजल सहित दोनों दरोगाओं को अरस्ट कर लिया गया। इस कार्रवाई से पुलिस महकमे में हड़कम्प मच गया है।

गाजीपुर के एक कॉलेज में लाखों रुपये की अवैध शराब बरामद, एक गिरफ्तार

गाजीपुर (एजेंसी)। गाजीपुर नगर से सटे छावनी स्थित 'टेनी मौर्य इंटर कॉलेज में छापा मार पुलिस ने अवैध अंग्रेजी एवं देशी शराब की बोतलें बरामद की। इस मामले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। ये शराब बिहार भेजने के लिए लाई गईं थीं। पुलिस ने मौके से दो वाहन भी बरामद किए हैं। पुलिस अधीक्षक सोमेन वर्मा ने बताया कि उन्हें छावनी लाइन स्थित इस विद्यालय में अवैध शराब की बड़ी खेप लाई जाने की जानकारी मिली थी, जिसे तस्कर बिहार ले जाने वाले थे। उन्होंने बताया कि जानकारी मिलने के बाद क्षेत्राधिकारी नगर हृदयानंद सिंह ने पुलिस बल के साथ 'टेनी मौर्य इंटर कॉलेज में छापा मारा। वहां कॉलेज के एक कक्ष में भारी मात्रा में अंग्रेजी व देशी शराब की बोतलें रखी हुयीं थीं।

प्रेमी ने विवाहित प्रेमिका की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या की, गिरफ्तार

बांदा। उत्तर प्रदेश के महोबा जिले में श्रीनगर थाना क्षेत्र के कुल्लाई पहाड़ीगांव में कल एक प्रेमी ने अपनी प्रेमिका की खेत में काम करते समय कुल्हाड़ी से काट कर हत्या कर दी। हत्या करने के बाद थाने पहुंचे आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अधीक्षक एन. कोलांची ने आज बताया, ''कुल्लाई पहाड़ीगांव में खेत में काम करते समय रूप सिंह यादव ने कल गांव की ही कलावती (35) की कुल्हाड़ी से काट कर हत्या कर दी और जहर खाकर खुद थाने पहुंच गया।

गुजरात-हिमाचल में विकास की भव्य जीत: मोदी

नई दिल्ली। गुजरात में बीजेपी को बहुमत से ज्यादा सीटों पर स्थायी बढ़त मिलते ही पार्टी के खेमे में खुशी की लहर दौड़ गई। इसी बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संसद के शीतकालीन सत्र में पहुंचे। वहां उन्होंने सदन में जाने से पहले मीडिया के सामने हाथ हिलाकर अभिवादन किया और विक्ट्री साइन बनाकर पार्टी की जीत का भरोसा जताया। बाद में ट्वीट कर कहा- गुजरात और हिमाचल प्रदेश में जीत गुड गवर्नेंस और विकास का नतीजा है। मैं बीजेपी कार्यकर्ताओं को सैल्यूट करता हूं जिन्होंने अथक मेहनत की। राजनाथ सिंह ने राहुल गांधी के कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद पहला ही चुनाव हारने पर पूछे गए एक सवाल पर कहा- सिर मुंडाते ही ओले पड़े। वहीं, गोवा के सीएम मनोहर पर्रिकर ने कहा- वो पहली ही इनिंग में जीरो पर आउट हो गए।

मोदी ने क्या कहा

गुजरात और हिमाचल प्रदेश में जीत गुड गवर्नेंस और विकास का नतीजा है। मैं बीजेपी कार्यकर्ताओं को सैल्यूट करता हूं जिन्होंने अथक मेहनत की। इनकी वजह से ही जीत हासिल हुई। मैं दोनों राज्यों की जनता को नमन करता हूं कि उन्होंने बीजेपी के लिए प्रेम और भरोसा दिखाया। मैं उनको ये

यकीन दिलाना हूं कि इन राज्यों के विकास के लिए हम कोई कोर कसर बाकी नहीं रखेंगे।

दोनों राज्यों में बनाएंगे सरकार: राजनाथ

इस बीच राजनाथ सिंह ने कहा गुजरात और हिमाचल प्रदेश दोनों जगह बीजेपी की सरकार बनने का भरोसा जताया।

उन्होंने कहा, ''हिमाचल और गुजरात दोनों जगह बहुमत के साथ सरकार बनेगी।''

गुजरात के डिप्टी सीएम नितिन भाई पटेल ने कहा, ''आखिरकार बीजेपी जीत दर्ज करने जा रही है। शुरुआत में कुछ विपरीत रुझान आने के बाद अब बीजेपी हर जगह बढ़त बनाए हुए है।''

योगी आदित्यनाथ ने क्या कहा

मोदी जी रणनीति की वजह से गुजरात और हिमाचल प्रदेश में जीत हासिल हुई है। अमित शाह जी की रणनीति को बीजेपी के कार्यकर्ताओं ने जमीन पर उतार दिया। विकास का विकल्प नहीं है। विपक्ष को संदेश दे दिया है। अब वो 2019 के बजाए 2024 की तैयारी करें। सच्चाई तो ये है कि मोदी जी का कोई विकल्प नहीं है।

आनंदीबेन ने माना- मुश्किल थे हालात

पूर्व सीएम आनंदी बेन पटेल ने कहा, ''गुजरात में बीजेपी छठी बार सरकार बनाने जा रही है। सभी कार्यकर्ता और खुद पीएम इसमें लगे थे। बहुत कठिन परिस्थिति थी।'' ''2012 में हम विकास का मुद्दा लेकर चले थे। इस बार भी हमारे लिए विकास का मुद्दा अहम था। चुनाव प्रचार के आखिरी दिनों में गाली-गलौच भी हुई।'' ''बीजेपी के शासन में स्थिति बेहतर हुई है। सिंचाई के लिए कैनाल बनी हैं, एजुकेशन की स्थिति बेहतर हुई है। सरकार बनने के बाद इस बारे में जरूर सोचा जाएगा कि कहां कमी रह गई और उसमें सुधार किया जा सकता है।'' उन्होंने कहा, ''2019 के लोकसभा चुनाव होने हैं। इसको लेकर विचार करना जरूरी है।''

नतीजे जो भी हों, कांग्रेस ही असली विजेता: गहलोत

गुजरात में कांग्रेस के प्रभारी अशोक गहलोत ने कहा, ''बीजेपी ने भावात्मक मुद्दों पर चुनाव लड़ा। मोदी ने वोटर्स से कहा कि वह गुजरात के बेटे हैं। उनकी प्रतिष्ठा दांव पर है। लेकिन कांग्रेस ने हकीकत में चुनाव प्रचार किया और किसानों, दलितों, जनजातियों और कारोबारियों से से जुड़े मुद्दों पर बात की। हमने लोगों से बात करने के बाद गुजरात के लोगों के लिए अपने घोषणापत्र को औपचारिक रूप दिया... नतीजे जो भी हों कांग्रेस और राहुल गांधी ही असली विजेता हैं।'' गुजरात में मोदी की 36 जगहों पर रैलियां हुईं। राहुल ने 57 जगहों पर रैलियां कीं। साथ ही, नवसृजन यात्रा भी निकाली। आठ बार राहुल गांधी गुजरात आए। मोदी ने सात बार गुजरात दौरा कर प्रचार किया। चुनाव कैम्पेन के दौरान राहुल 27 बार और मोदी 5 बार मंदिर गए।

दो बार गलत इंजेक्शन लगाने से 2 साल की बच्ची की आंतें फटीं, मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। शालीमारबाग क्षेत्र में झोलाछाप डॉक्टर ने दो साल की मासूम परी की जान ले ली। उसके पेट में मामूली दर्द था। आरोप है कि डॉक्टर ने बच्ची को हैवी डोज का इंजेक्शन लगा दिया। इससे उसकी आंतें फट गईं। इसके बाद नींद का इंजेक्शन लगा दिया, जिससे बच्ची बेहोश हो गई। 14 दिसंबर को परिजनों की शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी डॉक्टर आनंद कुमार अंतिल के खिलाफ केस दर्ज किया। हरि सिंह की पोती परी के पेट में अचानक दर्द होने लगा। इस पर बहू पूनम परी को डॉक्टर आनंद के पास ले गईं। डॉक्टर ने परी को इंजेक्शन लगा घर भेज दिया। घर आने पर उसकी हालत बिगड़ गई। पूरी रात उल्टियां करती रही। सुबह परिजनों ने डॉक्टर से कहा कि कैसा इंजेक्शन लगा दिया, जिससे बच्ची की तबियत और ज्यादा खराब हो गई।

कोर्ट ने 3 साल पहले जारी किया था आदेश

दिल्ली हाईकोर्ट ने 29 मई 2014 को झोलाछाप डॉक्टरों पर कार्रवाई को लेकर आदेश पारित किया था। दिल्ली मेडिकल काउंसिल, दिल्ली पुलिस, दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य विभाग की एक कमेटी भी बनाई गई थी। दिल्ली में नकली डॉक्टरों पर हर हफ्ते छापे मारे जाएं।

दिल्ली में 50 से 55 हजार तक झोलाछाप डॉक्टर

डॉ.बंसल ने बताया कि दिल्ली में करीब 55 हजार झोलाछाप डॉक्टर हैं। दिसंबर 2016 में इन पर कार्रवाई के लिए सीपी और दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य विभाग के वर्तमान सचिव तरुण सईस से मुलाकात की थी। लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।

नहीं लग रही लगाम

दिल्लीएंटी क्वैकरी सेल के पूर्व सदस्य डॉ. अनिल बंसल का कहना है कि पकड़े जाने पर झोलाछाप डॉक्टर 7 दिन में छूट जाते हैं। इन पर ठोस कार्रवाई नहीं हो पाती। डॉक्टर के पास नहीं है कोई डिग्री, पहले था कंपाउडर सूत्रों का कहना है कि डॉक्टर आनंद कुमार अंतिल के पास डॉक्टरी से संबंधित कोई डिग्री नहीं है। वह पहले आदर्श नगर में किसी डॉक्टर के पास कंपाउडर का काम करता था।

खैरानी रोड पर दुकानों में लगी आग, 12 लोगों की मौत

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई के उपनगरीय इलाके अंधेरी (पूर्व) के साकीनाका में आज तड़के एक दुकान में आग लगने से 12 लोगों की मौत हो गयी और कुछ अन्य लोगों के फंसे होने की आशंका है।

अग्निशमन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि लक्ष्मी-नारायण मंदिर के पास खैरानी रोड स्थित भानु फरसाण नामक दुकान में तड़के लगभग सवा चार बजे आग लग गयी। अग्निशमन विभाग के तीन वाहन 4:34 बजे तक घटनास्थल पर पहुंच गये थे।

घटना के समय 10 से 15 लोग दुकान में मौजूद थे जिनमें से 12 लोगों के शव मलबे से बरामद कर लिये गये हैं। शेष लोगों की तलाश की जा रही है। राहत एवं बचाव कार्य जारी है। तीन

दमकल, चार जंबो टैंकर और एंबुलेंस घटनास्थल पर मौजूद हैं। घाटकोपर के राजावाडी अस्पातल के अधिकारियों ने बताया कि दुकान के मलबे के नीचे से 12 लोगों को निकाल कर अस्पताल लाया गया लेकिन सभी मृत पाये गये। दुकान में भूतल पर लगी थी। लेकिन आग लगने से दुकान ढह गयी और सभी लाग मलबे में दब गये। चश्मदीद ने बताया कि पांच-छह लोग आग लगने के बाद दुकान से बाहर सुरक्षित निकलने में सफल हो गये।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि दुकान में काम करने वाले जो लोग अंदर सो रहे थे वे फंस गये और जो दुकान के बाहर सो रहे थे वे सुरक्षित बच गये। आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल सका है।

पार्क से अगवा कर हुई वारदात

निर्भया कांड की बरसी पर नाबालिक से गैंगरेप, पार्क से अगवा कर हुई वारदात

नई दिल्ली (एजेंसी)। निर्भया कांड की पांचवीं बरसी पर 16 वर्षीय एक नाबालिग छात्र के साथ तीन युवकों ने सामूहिक दुष्कर्म किया। वारदात उस वक्त हुई जब किशोरी अपने एक दोस्त के साथ शनिवार रात करीब सात बजे पार्क में बैठी हुई थी। घटना का खुलासा रविवार को हुआ। पीड़िता के बयान के आधार पर सामूहिक दुष्कर्म, अगवा करने, बंधक बनाकर वारदात को अंजाम देने और पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया। हालांकि इस बारे में संबंधित जिले की डीसीपी सहित जिले के किसी भी अधिकारी ने बयान नहीं दिया।

पीड़िता आठवीं की छात्र-

पुलिस के मुताबिक पीड़ित नाबालिग छात्र परिवार सहित उत्तर पश्चिमी दिल्ली में रहती है। वह कक्षा आठ की छात्र है। शनिवार शाम करीब सात बजे वह बेरीवाला पार्क में अपने एक दोस्त के साथ घूमने गई थी।

पुलिस को दिए गए बयान के मुताबिक पार्क में तीन-चार युवक पहुंचे और उन्होंने चाकू की नोंक पर दोनों को बंधक बना लिया। हालांकि नाबालिग छात्र के दोस्त ने युवकों का विरोध किया लेकिन उन्होंने उसकी पिटाई कर दी। इसके बाद छात्र के साथ तीन युवकों ने सामूहिक दुष्कर्म किया। घटना के बाद हमलावरों ने उन्हें किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। घटना से डरी सहमी पीड़िता किसी तरह अपने घर पहुंची और सो गई।

इस तरह हुआ खुलासा-

मामले का खुलासा रविवार को तब हुआ जब नाबालिग छात्र की तबीयत बिगड़ने लगी। परिजनों ने जब उससे पूछताछ की तो छात्र ने पूरी आप बीती बताई। इसके बाद परिजनों ने पुलिस को जानकारी दी। पुलिस ने पीड़ित छात्र का मेडिकल कराया और उसे अस्पताल में भर्ती कराया।

घटनाएं थम नहीं रहीं-

03 जुलाई 2017- मधु विहार इलाके में 19 वर्षीय एक युवती के साथ चलती कार में तीन युवकों ने किया सामूहिक दुष्कर्म

27 अक्तूबर 2016- शकरपुर में नौकरी दिलाने का झांसा देकर तीन युवकों ने 19 वर्षीय युवती से किया सामूहिक दुष्कर्म

दोस्त के सामने किशोरी से सामूहिक दुष्कर्म

नई दिल्ली। शालीमारबाग इलाके में तीन बदमाशों ने नाबालिग घरेलू सहायिका से उसके दोस्त के सामने ही सामूहिक दुष्कर्म किया। पीड़िता के दोस्त के विरोध करने पर बदमाशों ने जमकर उसकी पिटाई की और फरार हो गए। दोस्त के सूचना देने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया।

पीड़िता की स्थिति सामान्य है। पुलिस बदमाशों के खिलाफ झगड़ा करने, दुष्कर्म करने और पॉस्को एक्ट के तहत केस दर्ज उनकी तलाश कर रही है। कुछ लोगों को हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ की जा रही है। हैदरपुर इलाके में रहने वाली पीड़िता शनिवार शाम सात बजे काम खत्म कर दोस्त के साथ शालीमार बाग के बेरी वाला पार्क में बैठी थी। इसी दौरान वहां तीन युवक आए और उससे छेड़छाड़ करने लगे। दोस्त ने जब इसका विरोध किया तो बदमाश उसे पीटने लगे। पीड़िता ने जब दोस्त को बचाने की कोशिश की तो बदमाशों ने उससे दुष्कर्म किया। उसके निजी अंगों को बुरी तरह से चोट पहुंचाई गई है।

डबलॉथन : बड़े हौसले संग ट्रैक पर उतरे धावक और साइकिल सवार

वाराणसी(एजेंसी)। डिटॉल और एटलस के साथ मिलकर की गई अनोखी पहल 'डबलॉथन' में छोटे-छोटे धावक भी बड़े हौसले के साथ दौड़े। दो किलोमीटर की मैराथन में जहां आठ से 14 वर्ष तक के धावकों ने भरपूर जोश दिखाया, वहीं 14 वर्ष से अधिक उम्र के प्रतिभागियों ने दौड़ शुरू की तो दूर तक सिर्फ धावक ही धावक दिखाई पड़ रहे थे। यही नजारा साइकिल मैराथन के दौरान भी दिखा।

आयोजन की शुरुआत फिटनेस प्लैनेट के अखिलेश रावत और उनकी टीम के मूव वार्मअप सेशन से हुई। मंच पर अखिलेश की टीम म्युजिकल वार्मअप कर रही थी जबकि मंच के सामने खड़े सैकड़ों धावक उनका अनुकरण कर रहे थे।

चर्चित अथलीट नीलू मिश्रा के मंच पर चढ़ते ही वार्मअप सेशन में चार चांद लग गए। उन्हें मंच पर देखते ही प्रतिभागियों में गजब के उत्साह का संचार हुआ। करीब दस मिनट तक चले इस सेशन के बाद सबसे पहले आठ से 14 वर्ष उम्र के बालकों का हुजूम दो किलोमीटर की मैराथन दौड़ के लिए रवाना हुआ। इस हुजूम को मेयर मृदुला जायसवाल ने कई प्रमुख हस्तियों की मौजूदगी में हरी झंडी दिखाई।

बालकों के रवाना होने के करीब पांच मिनट बाद बालिकाओं की टोली रवाना हुई। दौड़ में शामिल छोटे-छोटे बच्चों का हौसला देखते ही बनता था। बहुत से बच्चे ऐसे थे जिन्हें पता था कि पहले तीन स्थान पर विजेताओं का फैसला हो चुका है, बावजूद इसके उन्होंने दौड़ पूरी करने के बाद ही अपने कदम रोके। फिनिशिंग प्वाइंट की ओर बढ़ते इन बच्चों की हौसलाअफजाई के लिए सैकड़ों अभिभावाक दोनों ओर खड़े रहे।

इसके बाद दस किलोमीटर की मैराथन दौड़ के लिए पहले बालकों, फिर कुछ अंतराल पर बालिकाओं के जत्थे को रवाना किया गया। इस जत्थे में दस फीसदी ही नियमित धावक थे। बाकी 90 प्रतिशत धावक ऐसे थे, जिन्होंने स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनी जिम्मेदारी महसूस करते हुए डबलॉथन में शिरकत की।

मैराथन दौड़ पूरी होने के बाद साइकिल मैराथन कराई गई। साइकिल मैराथन में भी प्रतिभागियों की भीड़ देख एटलस के बड़े अधिकारियों की बांछें खिल गईं। उनकी खुशी उनके चेहरे पर साफ झलक रही थी।

साइकिल मैराथन के दोनों ही वर्गों में शामिल प्रतिभागियों ने अपने हौसले और हुनर का बखूबी प्रदर्शन किया। बेशक जूनियर और सीनियर वर्ग में मेल प्रतिभागियों की संख्या अधिक थी लेकिन फीमेल वर्ग की प्रतिभागियों में भी जज्बा कम नहीं था। एक तरफ प्रतिभागी जहां स्पर्धा में बेहतर प्रदर्शन के

लिए पूरी ताकत के साथ जूझ रहे थे, वहीं उनके अभिभावक डीरेका मैदान में आई बिगब्वाय की अनूठी साइकिल देखने और उसके साथ सेल्फी लेने में मगन दिखे। अभिनव मेहरोत्रा की इस साइकिल के पहिए किसी बाइक के पहिए की भांति चौड़े थे। गियर के मामले में भी यह सामान्य साइकिलों से कहीं अलग थी।

प्रतियोगिता में निर्णाकों और रेफरी की भूमिका डीरेका एवं यूपी कॉलेज के वरिष्ठ खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों ने निभाई।

यदि किसी युवती के दोष जानना हों, तो उसकी सखियों में उसकी प्रशंसा करो। बेंजामिन फ्रैंकलिन

सच-झूठ की परख हो तो मोह छूटता है

हमारी सबसे बड़ी जो समस्या है इस राष्ट्र के अंदर, दुनिया के अंदर, पावरफुल लोग, बड़े बिज़नेस मैन लोग। अपनी सोच को दो सौ साल आगे ले जाएंगे कि ये बनेंगे, वो बनेंगे। मौत एक दिन आनी है। फिर इतनी आपाधापी क्यों? यह सत्य मुझे बहुत सुख देता है, शांति देता है। मेरा दूसरा ध्येय है राष्ट्र से प्रेम। तीसरा, शरीर को मंदिर समझना। शरीर ठीक है तो सब काम कर लोगे। चौथा, हमेशा ईश्वर की याद में रहना। सुबह उठकर मेरे लड़के सबसे पहले गायत्री मंत्र की सीडी बजाते हैं। हनुमान चालीसा। शबद कीर्तन। एयरपोर्ट से शहर जा रहे हैं कैसेट लगा दी। कभी-कभी भगत सिंह जी की कैसेट। सुनता रहता हूं। कोई विचार नहीं आता। जिसने सच-झूठ की परख कर ली उसे भीड़-भड़क्का कुछ अच्छा नहीं लगता। मोह छूट जाता है। भजन चल रहा है तो भगवान मेरे साथ है, दुनिया की मुझे जरूरत ही नहीं। यह जो अलिप्तता का भाव है यह तब पैदा हुआ जब मुझ पर अमृतसर में बम हमला हुआ। मुझे पीजीआई चंडीगढ़ लाया गया। मेरी माताजी ने उस वक्त एक सीडी लगा दी, जिसका नाम था 'हम आदमी एक दम के, पल की ख़बर नहीं।' एक अन्य सीडी थी 'पाप कर बंदे।' मैं 1992 की बात बता रहा हूं। मुझसे मिलने मुख्यमंत्री बेअंतसिंह आए मैंने उनसे कहा, 'सरदारजी मेरे पास तीन पोर्टफोलियो हैं। मुझे विदाउट पोर्टफोलियो कर दो।' हमने उन्हें यह नहीं बताया कि ऐसा क्यों कर दो। पीएम साहब का फोन आया तुम्हें दो डिपार्टमेंट और देना है। मैंने कहा विभाग ले लेंगे तो सुरक्षा वगैरह बनी रहेगी, प्रोटोकॉल चलता रहेगा। क्यों किया? इसकी ट्रान्सफर 500 किलोमीटर दूर कर दो। अब किसी की वाइफ अकेली है। पिताजी का ध्यान रखना है। क्यों किसी की बददुआ लेना। फिर राजनीति भी छोड़ दी कि हमारे से पाप हो जाए। लेकिन, जो भजन की बात मैंने बताई वह चार-पांच साल पहले की बात है। मैं अब भगवान बिना रह ही नहीं सकता। जहां तक देशभक्ति की बात है मैं सात साल की उम्र में दादाजी के साथ जलियांवाला बाग जाया करता था। वहां कुछ लोहे के निशान थे। मैंने पूछा यह क्या है तो उन्होंने बताया कि ये जनरल डायर द्वारा चलवाई गोलियों के निशान हैं, जिसमें हिंदू-सिख मारे गए थे। फिर उन्होंने जलियांवाला बाग, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस आदि की किताबें दीं। इन सबका ऐसा असर हुआ कि जहां दादाजी ने जलियांवाला बाग गोली कांड की बात बताई थी,आज़ादी कैसे मिली यह बताया था, तो मैंने वहीं खड़े रहकर शपथ ली कि आप लोगों ने आज़ादी दो दिला दी, कभी मौका पड़ा तो हम इस आज़ादी की रक्षा करेंगे। ज़िंदगी की शुरुआत हो गई। 15 अगस्त और 26 जनवरी मनाना शुरू किया। 10-12वीं में या शायद उससे आगे कि बात है कि भिंडरावाला हरमंदर साहब में गया। तब मैं कांग्रेस सेवादल का सदस्य था। 15 अगस्त आया तो वहां के जो एसएचओ थे तो उन्होंने कहा कि इस बार झंडा हरमंदर साहब के सामने मत लहराना, कहीं और लहराना।

आतंकियों ने कहा है कि बिट्टा झंडा लहराएगा तो बम फेंक देंगे। 1982 की बात है। मैंने कहा हमने तो शपथ ली है। तिरंगा झंडा राष्ट्र का है। हम खालिस्तान का झंडा नहीं लहरा रहे हैं। हमें 12 बजे झंडा लहराना था तो 5 बजे मेरे घर पर बम फेंक दिया गया। वहां 45 किलो आरडीएक्स का इस्तेमाल किया गया था। मैंने अपने पिताजी की रिवॉल्वर निकाली और पीछे जाकर फायरिंग शुरू कर दी। पर वे तो भाग गए थे। तो पहला बम हमला मैंने तिरंगे झंडे की रक्षा करते हुए झेला। उसके बाद तो बम-गोलियां झेलते गए अपनी लड़ाई आगे बढ़ाते गए। 1983 में दिल्ली में बम हमला हुआ। 40 किलो आरडीएक्स इस्तेमाल हुआ।' मैं 1992 की बात बता रहा हूं। मुझसे मिलने मुख्यमंत्री बेअंतसिंह आए मैंने उनसे कहा, 'सरदारजी मेरे पास तीन पोर्टफोलियो हैं। मुझे विदाउट पोर्टफोलियो कर दो। मैं अब भगवान बिना रह ही नहीं सकता। जहां तक देशभक्ति की बात है मैं सात साल की उम्र में दादाजी के साथ जलियांवाला बाग जाया करता था। मैंने पूछा यह क्या है तो उन्होंने बताया कि ये जनरल डायर द्वारा चलवाई गोलियों के निशान हैं, जिसमें हिंदू-सिख मारे गए थे। फिर उन्होंने जलियांवाला बाग, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस आदि की किताबें दीं। इन सबका ऐसा असर हुआ कि जहां दादाजी ने जलियांवाला बाग गोली कांड की बात बताई थी, आज़ादी कैसे मिली यह बताया था, तो मैंने वहीं खड़े रहकर शपथ ली कि आप लोगों ने आज़ादी दो दिला दी, कभी मौका पड़ा तो हम इस आज़ादी की रक्षा करेंगे। ज़िंदगी की शुरुआत हो गई। एक आतंकी था मेजर सिंह उसने कहा मैं मार दूंगा।

पूछा गया कि तू कैसे मार देगा। वो तो मरता ही नहीं। इतने बम हमले किए। कहने लगा पूरे ट्रक में बम फिट करक उसके काफिले में घुसा दूंगा। मैं भी मर जाऊंगा। पर वे पकड़े गए। मुझ पर हुए हमलों में 14 तो रिकॉर्ड में हैं। हमारी सबसेबड़ी जो समस्या है इस राष्ट्र के अंदर, दुनिया के अंदर, पावरफुल लोग, बड़े बिज़नेस मैन लोग। मौत एक दिन आनी है। फिर इतनी आपाधापी क्यों? यह सत्य मुझे बहुत सुख देता है, शांति देता है। मेरा दूसरा ध्येय है राष्ट्र से प्रेम। चौथा, हमेशा ईश्वर की याद में रहना। एयरपोर्ट से शहर जा रहे हैं कैसेट लगा दी। कभी-कभी भगत सिंह जी की कैसेट। सुनता रहता हूं। कोई विचार नहीं आता। जिसने सच-झूठ की परख कर ली उसे भीड़-भड़क्का कुछ अच्छा नहीं लगता। मोह छूट जाता है। भजन चल रहा है तो भगवान मेरे साथ है, दुनिया की मुझे जरूरत ही नहीं।

संवारनी होगी स्वास्थ्य ढांचे की सेहत

नीति-नियंताओं की आंखें खोलने वाली है, क्योंकि लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना शासन में बैठे लोगों का बुनियादी दायित्व है। दुर्भाग्य से भारत की गिनती दुनिया के उन देशों में होती है, जहां सरकारी स्वास्थ्य ढांचा दयनीय दशा में है और निजी क्षेत्र के स्वास्थ्य ढांचे का खर्च आम लोगों के बूते के बाहर है। इसी कारण संयुक्त राष्ट्र का मानव विकास सूचकांक यह दर्शाता है कि स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में भारत का स्थान कई अफ्रीकी देशों से भी पीछे है। इसमें कोई दोराय नहीं कि देश की आजादी के बाद जिस स्वास्थ्य ढांचे का निर्माण किया गया, वह अब और अधिक अपर्याप्त नजर आने लगा है। बीते चार दशकों में मेडिकल साइंस ने बहुत तरक्की की है।

सतीश पेडणोकर

हाल ही में सामने आई विश्व बैंक और विश्व स्वास्थ्य संगठन की ट्रैकिंग यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज नामक रिपोर्ट यह बताती है कि भारत समेत विश्व के अधिकांश देशों की एक बड़ी आबादी इसलिए कर्जदार होकर गरीबी रेखा के नीचे पहुंचती जा रही है, क्योंकि बीमारी की हालत में वह अपनी जेब से इलाज खर्च वहन करने को विवश होती है। यह रिपोर्ट नीति-नियंताओं की आंखें खोलने वाली है, क्योंकि लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना शासन में बैठे लोगों का बुनियादी दायित्व है। दुर्भाग्य से भारत की गिनती दुनिया के उन देशों में होती है, जहां सरकारी स्वास्थ्य ढांचा दयनीय दशा में है और निजी क्षेत्र के स्वास्थ्य ढांचे का खर्च आम लोगों के बूते के बाहर है। इसी कारण संयुक्त राष्ट्र का मानव विकास सूचकांक यह दर्शाता है कि स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में भारत का स्थान कई अफ्रीकी देशों से भी पीछे है। इसमें कोई दोराय नहीं कि देश की आजादी के बाद जिस स्वास्थ्य ढांचे का निर्माण किया गया, वह अब और अधिक अपर्याप्त नजर आने लगा है। बीते चार दशकों में मेडिकल साइंस ने बहुत तरक्की की है। नई तकनीक, अधिक असरकारी दवाओं और आधुनिक उपकरणों के चलते चिकित्सक उन अनेक बीमारियों पर काबू पाने में समर्थ हैं, जो कुछ समय पहले तक लाइलाज मानी जाती थीं। इन बीमारियों का उपचार इसलिए आसान हुआ है, क्योंकि रोगों की सही पहचान के लिए तमाम अत्याधुनिक मशीनें इस्तेमाल होने लगी हैं। इसी के साथ नई-नई दवाओं की खोज के चलते यह माना जाने लगा है कि जल्द ही चिकित्सा जगत एड्स सरीखे रोगों का भी निदान खोजने में समर्थ होगा। विडंबना यह है कि जैसे-जैसे बीमारियों के निदान में उपकरणों और प्रभावी दवाओं की भूमिका बढ़ रही है, वैसे-वैसे इलाज महंगा भी होता जा रहा है। हर कोई अपना अथवा अपने परिजनों का बेहतर इलाज कराना चाहता है, लेकिन जहां सरकारी अस्पतालों की अव्यवस्था और उचित इलाज के अभाव की शिकायतें उन्हें हतोत्साहित करती हैं, वहीं निजी अस्पतालों का महंगा इलाज उन्हें डराता है।

कई प्राइवेट अस्पतालों का इलाज तो इतना महंगा है कि वहां चंद दिनों का उपचार लोगों की कमर तोड़ देता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि इन अस्पतालों के डॉक्टर बेहतर इलाज के जरिए मरीज को बचा लेने की उम्मीद जगाते हैं। इस उम्मीद में लोग अपने परिजन को बचाने के लिए कुछ भी करने और यहां तक कि जेवर-जमीन बेचने को भी तैयार हो जाते हैं। एक ओर आम लोग ऐसा करने को विवश हैं, वहीं दूसरी ओर निजी अस्पताल लापरवाही और लूट-खसोट का परिचय देते दिख रहे हैं। बीते दिनों दिल्ली के एक निजी अस्पताल ने नवजात जुड़वां बच्चों को मृत करार दिया, जबकि उनमें से एक जीवित था। इसके पहले गुरुग्राम के एक निजी अस्पताल ने डेंगू के इलाज के नाम पर 16 लाख का बिल बना दिया और मरीज को बचा भी नहीं सका। इस अस्पताल ने दवाओं और मेडिकल सामग्री के आठ-दस गुना दाम वसूले और फिर भी इस आधार पर खुद को सही ठहरा रहा कि उसने तो एमआरपी के हिसाब से ही पैसे लिए। निजी अस्पतालों का ऐसा रवैया चिकित्सा पेशे के साथ-साथ मानवता के भी खिलाफहै। हर कोई यह जानता है कि जीवन-मौत मनुष्य के हाथ नहीं है, फिर भी वे डॉक्टरों पर भरोसा करते हैं और उन्हें भगवान समान मानते हैं, लेकिन आज इन्हीं डॉक्टरों का एक वर्ग पैसा कमाने को सबसे ज्यादा महत्व देते दिख रहा है। एक बड़ी संख्या में निजी अस्पताल मनमाने पैसे वसूल करने के लिए कुख्यात हो रहे हैं। चूंकि सरकारी स्वास्थ्य ढांचा चरमरा रहा है, इसलिए निजी अस्पताल की सेवाएं लेना मजबूरी बन गई है। यह सही है कि निजी अस्पताल आधुनिक उपकरणों के साथ बेहतर डॉक्टरों और सुविधाओं से लैस हैं, लेकिन उनमें सेवाभाव की कमी भी देखने में आ रही है। ऐसा लगता है कि वे कम समय में अधिक मुनाफा कमाने की होड़ में शामिल हो गए हैं। समझना कठिन है कि वह शपथ निष्प्रभावी क्यों हो रही है जो डॉक्टर लेते हैं? नि:संदेह निजी अस्पताल चलाने वाले डॉक्टरों से यह अपेक्षा नहीं की जाती और न ही करनी चाहिए कि वे सेवाभाव के आगे यह भूल जाएं कि उन्हें मुनाफा हो रहा है या नहीं, लेकिन कम से कम यह तो नहीं होना चाहिए कि पांच रुपए वाली डिस्पोजल सिरिंज के दो सौ रुपए वसूल किए जाएं।

निजी अस्पतालों को लेकर ऐसी शिकायतें बढ़ रही हैं कि वे बिल बढ़ाने के लिए अनावश्यक जांच कराते हैं और साधारण बीमारी को भी गंभीर बताते हैं। अब तो ऐसी शिकायतें भी आने लगी हैं कि मरीज की मौत के बाद भी उसे वेंटीलेटर में रखकर जीवित बताया जाता है। महंगी दवाएं भी एक बड़ी समस्या हैं और इसकी जड़ में दवा कंपनियां भी हैं। वे डॉक ?टरों को महंगे उपहार देकर अपनी महंगी दवाएं उपयोग में लाने के लिए कहते हैं। इसी कारण दो रुपए की लागत वाली दवा कई बार मेडिकल स्टोर में बीस रुपए में मिलती है। एमआरपी के चलते यह गोरखधंधा बेरोकटोक चल रहा है। ऐसा नहीं है कि विश्व के सभी देशों में एक जैसी स्थिति है। कुछ देशों ने नियम-कानूनों और प्रभावी नियमन के जरिए स्वास्थ्य ढांचे को आम आदमी के वहन कर सकने लायक बनाया है, लेकिन ऐसे देश उंगलियों पर गिनने लायक ही हैं। बेहतर स्वास्थ्य ढांचे के निर्माण के लिहाज से भारत की स्थिति गई-बीती है। हमारे यहां स्वास्थ्य केंद्र एवं राज्य, दोनों का विषय है। केंद्र सरकार नीतियां बनाने का काम करने के साथ चंद अस्पतालों का निर्माण करने तक सीमित है। स्वास्थ्य ढांचे में सुधार के मामले में ज्यादा जिम्मेदारी राज्यों की है। वे अपने दायित्वों के निर्वहन के प्रति सजग नहीं। स्थिति इतनी खराब है कि जरूरत भर के डॉक्टर भी तैयार नहीं हो पा रहे और जो तैयार भी होते हैं, वे छोटे सरकारी अस्पतालों में सेवाएं देने के लिए सहमत नहीं होते। एक अन्य समस्या मेडिकल शिक्षा तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार है। एमबीबीएस करने वाले तमाम छात्र पीजी की पढ़ाई के लिए रिश्वत देने को विवश हैं। यह अच्छी बात है कि मोदी सरकार ने मेडिकल शिक्षा और साथ ही स्वास्थ्य क्षेत्र की खराब हालत को समझते हुए मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया यानी एमसीआई को खत्म करने और उसके स्थान पर नेशनल मेडिकल कमीशन बनाने का फैसला किया।

एमसीआई एक भ्रष्ट संस्था के तौर पर उभर आई थी। उस पर पैसे लेकर मेडिकल कॉलेजों को मान्यता देने और साथ ही अपात्र मेडिकल कॉलेजों को हरी झंडी देने के गंभीर आरोप लगे। प्रस्तावित नेशनल मेडिकल कमीशन पर एक महती जिम्मेदारी है। उसे सरकार के साथ-साथ देशवासियों की उम्मीदों पर भी खरा उतरना होगा। अब जब मोदी सरकार मेडिकल कमीशन बनाने जा रही है तब उसे यह भी ध्यान रखना होगा कि स्वास्थ्य पर खर्च बढ़ाने की भी सख्त जरूरत है। यह अनिवार्य है कि सरकार जीडीपी का 2.5 प्रतिशत स्वास्थ्य पर खर्च करने की अपनी घोषणा पर अमल करे। इसी के साथ राज्य सरकारें भी इस बात को समझें कि मेडिकल शिक्षा और स्वास्थ्य ढांचे को सुधारने के मामले में उन्हें भी वैसी ही प्रतिबद्धता प्रदर्शित करने की जरूरत है, जैसी केंद्र सरकार प्रदर्शित कर रही है।

चलते चलते

बिगड़ने लगा मौसम का संतुलन, बढ़ गईं हैं प्राकृतिक आपदाएं

ग्लोबलवार्मिंगके बढ़ते असर के संकेत किस तरह मिलेंगे? कौन-कौन से देश इससे प्रभावित होंगे। ऐसे कई सवाल पिछले वर्षों में उठते रहे हैं। जलवायु वैज्ञानिकों ने अपने शोध के निष्कर्ष हाल ही में बताए हैं। वे कहते हैं कि दुनियाभर के मौसम का संतुलन बिगड़ने लगा है। इसके अतिरिक्त नई प्राकृतिक आपदाएं ऐसी हैं, जिनका सीधा संबंध ग्लोबल वार्मिंग से है। पृथ्वी के मौसम में मौजूदा परिवर्तन को वैज्ञानिकों ने 'एक्स्ट्रीम वेदर' कहा है। उसमें वर्ष 2016 को अब तक के दर्ज इतिहास में सबसे गर्म वर्ष कहा गया है। एशिया और आर्कटिक में रिकॉर्ड गर्मी बढ़ी है और ब्राजील एवं दक्षिण अफ्रीकी देशों का बड़ा हिस्सा रिकॉर्ड सूखे की चपेट में आया है। जलवायु वैज्ञानिकों ने पिछले वर्ष की प्राकृतिक आपदाओं का अध्ययन किया। उन्होंने पता लगाया कि किसे

जलवायु वैज्ञानिकों ने अपने शोध के निष्कर्ष हाल ही में बताए हैं। वे कहते हैं कि दुनियाभर के मौसम का संतुलन बिगड़ने लगा है। इसके अतिरिक्त नई प्राकृतिक आपदाएं ऐसी हैं, जिनका सीधा संबंध ग्लोबल वार्मिंग से है। पृथ्वी के मौसम में मौजूदा परिवर्तन को वैज्ञानिकों ने 'एक्स्ट्रीम वेदर' कहा है।

ग्लोबल वार्मिंग का असर कहा जा सकता है और किसे नहीं। दुनियाभर के शोधकर्ताओं ने पाया कि 27 प्राकृतिक आपदाएं एक्स्ट्रीम वेदर के अंतर्गत आती हैं। यह प्रयास जलवायु परिवर्तन पर गहराई से अध्ययन करने के लिए है, जिससे पता चले कि बढ़ती गर्मी और बदलते मौसम का आपस में क्या कनेक्शन है। तापमान बढ़ने की स्थिति में वैज्ञानिक आमतौर पर वास्तविक दुनिया के डेटा का अध्ययन करते हैं। अध्ययन के अन्य तरीकों को शामिल करके वैज्ञानिकों ने प्राकृतिक घटनाओं और बदलते मौसम को चिन्हित किया है। पहली घटनादुनियाभर में बढ़ते तापमान की है। पिछले वर्ष पृथ्वी का तापमान सर्वाधिक था। उसका मुख्य कारण अल नीनो था, जिससे जमीन के तापमान में वृद्धि होती है। चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेस के प्रोफेसर शिन्ग युआन कहते हैं, इस बार के सूखे ने 60 वर्षों में विपरीत हालात पैदा किए हैं। चौथी बड़ी घटना उत्तरी अमेरिका में आग की है। पश्चिम कनाडा और अमेरिका में 89 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में फैले जंगल आग की भेंट चढ़ गए। अल्बर्टा राज्य में ही में भारी संख्या में लोग पलायन कर गए और 2400 घर आग की भेंट चढ़ गए। पांचवी ं बड़ी घटना अलास्का जैसे सर्द राज्य से जुड़े समुद्र में गर्माहट बढ़ना है। वहां उसे 'द ब्लॉब' कहते हैं। पानी में गर्माहट बढ़ने के कारण उस क्षेत्र में जहरीले शैवाल बढ़ने लगे हैं। हजारों सी-बर्ड की जान चली गई और प्रशासन को मत्स्य पालन बंद करना पड़ा है।

चलते चलते

विकास को पागल बताने वाली सियासत

पिछले 22 वर्षों से गुजरात की सत्ता पर काबिज भाजपा राज्य की जनता से एक बार फिर जनादेश की गुहार लगा रही है तो इतने लंबे अरसे से सत्ता से बाहर रही कांग्रेस को वापसी का सुनहरा मौका नजर आ रहा है। दिलचस्प यह है कि अमूमन रक्षात्मक रहने वाली कांग्रेस इस बार खासे आक्रामक तेवर दिखा रही है और भाजपा को उसी के हथियार से मात देने की फिराक में है। यह हथियार और कुछ नहीं विकास का वही 'गुजरात मॉडल है, जिसके दम पर नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री के पद तक पहुंच गए। अब कांग्रेस के निशाने पर यही गुजरात मॉडल है। उसका आरोप है कि गुजरात में कोई विकास हुआ ही नहीं। प्रथमदृष्टया उसका यह आरोप हैरान करता है, क्योंकि हाल तक कांग्रेसी यह कहते नहीं थकते थे, 'मोदी ने किया ही क्या है? गुजरात तो पहले से ही विकसित था! मोदी के गुजरात मॉडल का पहला स्तंभ राज्य और कानून-व्यवस्था से जुड़ा है, जिसमें कानून के राज को आदर्श रूप से स्थापित किया गया। कांग्रेसी शासन में दंगा-राज और गुंडा-राज ही गुजरात का यथार्थ था। राजनीतिक सत्ता का सारा खेल जाति और मजहब के गुणा-गणित पर आधारित था। सभी राजनीतिक दलों ने अपने-अपने पक्ष की जातियों के 'बाहुबलियों को प्रश्रय देने की नीति अपना रखी थी। ये बाहुबली चुनाव के वक्त काम आते थे। इसके विपरीत गुजरात मॉडल के केंद्र में हिंदुत्व के आधार पर एक संयुक्त हिंदू मतदाता वर्ग का निर्माण किया गया। 2013-2017 में गुजरात की अर्थव्यवस्था में औद्योगिक और उत्पादन क्षेत्र का हिस्सा 28.4 फीसदी से बढ़कर 34.4 फीसदी हो गया है, जो कि चीन के समकक्ष है। 1999-2000 में गुजरात यदि भारत का पांचवां सबसे समृद्ध राज्य था तो आज यह तीसरा सबसे समृद्ध राज्य है। गुजरात सबसे कम बेरोजगारी वाले क्षेत्रों में से है। दरअसल, गुजरात आज पश्चिम बंगाल, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश और अन्य इलाकों के मजदूरों के पलायन का मुख्य केंद्र है। रोजी-रोटी की तलाश में गुजरात जाने वालों में अमेठी और रायबरेली के लोग भी शामिल हैं। सोशल सेक्टर में भी गुजरात की प्रगति सराहनीय है। आज आंकड़ों को गलत तरीके से प्रदर्शित करके गुजरात की दूसरी ही तस्वीर खींची जा रही है। केरल में शिशु मृत्युदर (12/1000) की गुजरात (33/1000) से तुलना करके यह बताया जा रहा है कि गुजरात में विकास के दावे झूठे हैं। जो नहीं बताया जा रहा वो यह कि 2001 में केरल में ये दर 11/1000 थी, गुजरात में 60/1000। केरल में यह 11 से बढ़कर 12 हुई है, तो गुजरात में 60 से घटकर 2015 में 33 हुई और 2017 में कुछ और कम। गुजरात कम पानी वाला क्षेत्र है। यहां की बहुत-सी जमीन बंजर है या फिर कम उपजाऊ, फिर भी गुजरात कृषि क्षेत्र में 11 प्रतिशत तक की विकास दर हासिल करने में सक्षम रहा है। इसराइल की सिंचाई की आधुनिक तकनीक ड्रिप-सिंचाई को अपनाने, 1,00,000 चेक-डैम बनाने, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, कृषि बाजार में सुधार, किसानों को सूचना के साधनों और तकनीक से जोड़ने के जो काम किए गए, उनके चलते हालात पहले से बेहतर हुए हैं। गुजरात मॉडल में आधारभूत संरचना में निवेश पर भी खासा जोर दिया गया है। बिजली क्षेत्र में सुधार का गुजरात सफल उदाहरण है। गुजरात सौ फीसदी गांवों में बिजली पहुंचाने वाला पहला राज्य है। वह घरेलू उपभोक्ताओं को 24 घंटे और खेती-सिंचाई जैसे कार्यों के लिए प्रतिदिन 8-10 घंटे बिजली देने में सफल रहा है। गुजरात मॉडल का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ प्रशासनिक सुधार है। मोदी ने गुजरात में न केवल पेशेवर लोगों की नियुक्ति पर जोर दिया, बल्कि नियुक्तियों और प्रोन्ति में कार्य प्रदर्शन को अहमियत देना शुरू किया। इसके अलावा नई टेक्नोलॉजी खासकर डिजिटल टेक्नोलॉजी को बड़े पैमाने पर सरकारी ढांचे में एकीकृत करना शुरू किया। इससे जहां सरकार की कार्यक्षमता बढ़ी, वहीं भ्रष्टाचार पर लगाम लगी। सीएमएस के 2017 के एक शोध के अनुसार कांग्रेस शासित कर्नाटक देश का सबसे भ्रष्ट राज्य है वहीं गुजरात में 2005-17 के बीच भ्रष्टाचार में कमी आई है।

प्रदूषण पर लापरवाह रवैया

अपने देश में इंसान के बुनियादी हितों और यहां तक कि देश की प्रतिष्ठा को लेकर भी सरकारें कितनी लापरवाह रहती हैं, इसकी एक मिसाल राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में देखने को मिली है। महीने भर के ऊपर से यहां के लोग प्रदूषण की खतरनाक समस्या का सामना कर रहे हैं। मगर यहां की अरविंद केजरीवाल सरकार ऐसे गंभीर मसले पर भी सियासी दांव खेलने में उलझी रही है। पिछले दिनों जब पड़ोसी राज्यों (कुछ खबरों के मुताबिक पड़ोसी देशों) से धुआं आकर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) पर छा गया, तो विभिन्न् प्रशासनिक स्तरों पर कुछ हरकतें देखने को मिलीं। किंतु जैसे ही स्मॉग छंटा, सब निश्चिंत हो गए। जबकि स्मॉग प्रदूषण का सिर्फ एक पहलू है। एनसीआर की हवा में पीएम-2.5 नामक प्रदूषक तत्व की मात्रा लगातार उस स्तर पर पहुंचती रही है, जिसे मानव स्वास्थ्य के लिए खतरनाक समझा जाता है। लेकिन अब इसे सामान्य बात मान लिया गया है। जबकि किसी-किसी रोज ये मात्रा अत्यधिक बढ़ जाती है। ऐसा ही रविवार और फिर सोमवार को हुआ।

नई दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में भारत-श्रीलंका के बीच खेले जा रहे टेस्ट मैच में रविवार को श्रीलंकाई खिलाड़ी मास्क पहनकर मैदान पर उतरे और उनकी शिकायत पर कुछ देर के लिए खेल भी रोकना पड़ा। मगर ये घटना नहीं होती, तो शायद ही इस तरफकिसी का ध्यान जाता कि रविवार को पीएम-2.5 की मात्रा कुछ जगहों पर 500 के करीब पहुंच गई, जबकि 151 के बाद इसे लोगों के लिए अस्वास्थ्यकर और 300 के बाद खतरनाक माना जाता है। स्पष्टत: स्थिति लगातार विकट बनी हुई है। लेकिन इसे संभालने की कोई कार्ययोजना अब तक सामने नहीं आई है। अत: नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) सोमवार को नाराज दिखा, तो ये प्रतिक्रिया लाजिमी थी। एनजीटी ने पिछले 28 नवंबर को दिल्ली और उसके पड़ोसी राज्यों (पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान) से प्रदूषण से निपटने की व्यापक कार्ययोजना पेश करने का निर्देश दिया था।

सरकारें खामोश बैठी रहीं। उधर अधिकारियों ने हवा की खराब गुणवत्ता के बावजूद भारत-श्रीलंका टेस्ट मैच के आयोजन को हरी झंडी दी। एनजीटी ने उचित प्रश्न उठाया कि हवा के हाल को देखते हुए क्या यह वाजिब नहीं था कि मैच नहीं होने दिया जाता? अब कोर्ट ने बुधवार तक प्रदूषण रोकने के उपायों की योजना पेश करने को कहा है। अच्छा होगा कि युद्धस्तर पर ये कार्ययोजना बनाकर ट्रिब्यूनल को सौंपी जाए। साफ है, अब बेहद कड़े कदम उठाने होंगे। उनसे सबको कुछ दिक्कतें भी हो सकती हैं। लेकिन सबको इसमें पूरा सहयोग करना होगा। एनसीआर में हालात बर्दाश्त से बाहर हैं। लेकिन कई दूसरे राज्यों में भी स्थिति असंतोषजनक है। हालिया तजुर्बे से साफहै कि हवा और पर्यावरण की कोई इलाकाई सीमा नहीं होती। इसके मद्देनजर बेहतर होगा कि केंद्र सारे देश के लिए व्यापक कार्ययोजना बनाने की पहल करे। आवश्यक हो, तो मुख्यमंत्रियों की आपात बैठक बुलाई जाए। अमल की शुरुआत भले एनसीआर से हो, लेकिन उन उपायों को सारे देश में लागू करना होगा।

सत्संग

भावना, संवेदना से मिलता है आनंद

संसार तभी आनंद देगा जब इसमें रहने वाला, यहां अपना दैनंदिन जीवन बिताने वाला मनुष्य भावनाओं और संवेदनाओं से भरा होगा। भाव-संवेदना रूपी गंगोत्री के सूख जाने पर व्यक्ति निष्ठुर बनता चला जाता है। आज का सबसे बड़ा दुर्भिक्ष इन्हीं भावनाओं के क्षेत्र का है। जब भी इस संसार में कोई अवतारी चेतना आई है, उसने एक ही कार्य किया- मनुष्य के अंदर से उस गंगोत्री के प्रवाह के अवरोध को हटाना और सृजन-प्रयोजनों में उसे नियोजित करना। कुछ कथानकों द्वारा व दृष्टांतों के माध्यम से इस तथ्य को भलीभांति समझा जा सकता है। देवर्षि नारद एवं वेद व्यास के वार्तालाप के एक तथ्य से स्पष्ट होता है कि मानवीय गरिमा का उदय जब भी होता है, सबसे पहले भावचेतना का जागरण होता है। तभी वह ईश्वर-पुत्र की गरिमामय भूमिका निभा पाता है। चैतन्य जैसे अंतर्दृष्टि-संपन्न् महापुरुष भी शास्त्र-तर्क मीमांसा के युग में इसी चिंतन को दे गए। भाव श्रद्धा के प्रकाश में मनुष्यता, जो कि इस समय में कहीं खो गई है, उसे पुन: पाया जा सकता है। पीतांबरा मीरा जीवनभर करुणा विस्तार का, ममत्व का ही संदेश देती रहीं। जब संकल्प जागता है, तो अशोक जैसा निष्ठुर भी बदल जाता है। अशोक एक मामूली व्यक्ति से अशोक महान बन जाता है। जीसस का जीवन करुणा के जन-जन तक विस्तार का संदेश देता है। दक्षिण अफ्रीका में वकालत सीखने-करने पहुंचे मोहनदास गांधी नामक एक सामान्य शख्स इसी भाव-संवेदना के जागरण के कारण एक घटना मात्र से महात्मा गांधी बन गए और जीवन भर आधी धोती पहनकर एक पराधीन राष्ट्र को स्वतंत्र करने में सक्षम हुए। ठक्कर बापा के जीवन में भी यही क्रांति आई। वस्तुत: अवतारी चेतना जब भी सक्रिय होती है, इसी रूप में व्यक्ति को बेचैन करके उसके अंतर्मन को आमूलचूल बदल डालती है। ये भाव-संवेदना ही है, जो मनुष्य को गहराई से जोड़कर उससे महान कार्य करवा लेती है।

अशिता, अराधना स्क्वाश स्पर्धा के सेमीफाइनल में

मुंबई। शीर्ष वरीयता प्राप्त अशिता भेंग्रा और दूसरी वरीय आराधना कस्तूरीराज आसान जीत के साथ 74वें सीसीआई-वेस्टर्न इंडिया स्क्वाश टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंची। तमिलनाडु की अशिता ने पश्चिम बंगाल की तान्या पारेख को सीधे गेम में 11-6, 11-6, 11-5 से मात दी । तमिलनाडु की ही आराधना ने महाराष्ट्र की अभिलाषा भसीन को 6-11, 11-7, 11-5, 11-7 से शिकस्त दी। सेमीफाइनल में अशिता का मुकाबला गोवा की स्पर्शी माट्टास से होगा। स्पर्शी ने खुद से बेहतर वरीयता प्राप्त महाराष्ट्र की मीरा कामत को 11-9, 11-4, 11-8 से हराया। फाइनल में जगह पक्की करने के लिये आराधना मध्य प्रदेश की राधिका राठौड़ से भिड़ेंगी। राधिका ने क्वार्टरफाइनल में महाराष्ट्र की इरा गोसावि को एकतरफा मुकाबले में 11-4, 11-5, 11-1 से पराजित किया। लड़कियों के अंडर-17 वर्ग के क्वार्टरफाइनल में महाराष्ट्र की गैरवरीय अनन्या दाबके ने दूसरी वरीय दिल्ली की अमिरा सिंह को 11-6, 11-8, 9-11, 12-10 शिकस्त देकर उलटफेर किया। चंडीगढ़ की शीर्ष वरीय जान्निया सिंह ने महाराष्ट्र की अवनी नागर को 11-6, 11-7, 14-16, 9-11, 11-4 से हराकर सेमीफाइनल में जगह पक्की की।

ब्राजीली स्टार काका ने फुटबाल कैरियर को अलविदा कहा

रियो दि जिनेरियो। ब्राजील के पूर्व विश्व कप चैम्पियन काका ने फुटबाल कैरियर को अलविदा कह दिया और संकेत दिये कि वह अपने पूर्व क्लब एसी मिलान में मैनेजर की भूमिका निभा सकते हैं। काका ने कहा,'' मैं फुटबाल से नाता नहीं तोड़ रहा हूं लेकिन भूमिका बदली हुई होगी। अब मैं पेशेवर खिलाड़ी नहीं हूं।'' उन्होंने कहा ,'' मैं एक क्लब में मैनेजर या खेल निदेशक का पद ले सकता हूं।'' काका ने कहा कि एसी मिलान ने हाल ही में उनके सामने पेशकश रखी थी। मिलान के साथ खेलते हुए ही काका ने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ फुटबालर का खिताब जीता था।

राहुल भारद्वाज जूनियर राष्ट्रीय बैडमिंटन चैम्पियनशिप के फाइनल में

गुवाहाटी। एअर इंडिया के छठी वरीयता प्राप्त राहुल भारद्वाज यहां 42वें जूनियर राष्ट्रीय बैडमिंटन चैम्पियनशिप में अंडर-19 के सेमीफाइनल मुकबले में उलटफेर करते हुये शीर्ष वरीय पश्चिम बंगाल के अरिंताप दासगुप्ता को शिकस्त देकर फाइनल में पहुंचे। राहुल ने अरिंताप को सीधे गेमों में 21-12, 21-17 से शिकस्त दी। फाइनल में उनका मुकाबला आर्यमान टंडन और अभिषेक सैनी के बीच होने वाले सेमीफाइनल मुकाबले के विजेता से होगा। लड़कों के अंडर-17 वर्ग में चौथी वरीयता प्राप्त मणिपुर के मैसनाम मीराबा ने असम के इमान सोनोवाल को 21-13, 21-19 से पराजित किया। फाइनल में उनका मुकाबला मध्य प्रदेश के अमित राठौड़ से होगा, जिन्होंने एक अन्य सेमीफाइनल में उत्तराखंड के शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी ध्रुव रावत को 21-13, 21-14 से मात दी। शीर्ष वरीय छत्तीसगढ़ की आकर्षि कश्यव को लड़कियों के अंडर-17 वर्ग के फाइनल में पहुंचने के लिये ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ी। उन्होंने कर्णाटक की तृषा हेगड़े को 21-12, 21-16 से हराया। फाइनल में वह दूसरी वरीयता प्राप्त महाराष्ट्र की मालविका बानसूद से भिड़ेंगी जिन्होंने एक अन्य सेमीफाइनल में उत्तराखंड की उन्नति बिष्ट को एकतरफा मुकाबले में 21-12, 21-13 से मात दी। महिलाओं की अंडर-19 वर्ग में भी आकर्षि सेमीफाइनल में पहुंचने में कामयाब रही और वह इस टूर्नामेंट में दोहरा खिताब जीत सकती है। क्वार्टरफाइनल मुकाबले में उनकी विरोधी केरल की आद्या वरियाथ ने मैच को बीच में छोड़ दिया। फाइनल में पहुंचने के लिए उन्हे मालविका को हराना होगा। मालविका ने दूसरे क्वार्टरफाइनल में गुजरात की दिप्ति कुइते को 21-12 ,21-19 से शिकस्त दी। हरियाणा की सातवीं वरीयता प्राप्त इरा शर्मा ने दूसरी वरीयता एअर इंडिया की पूर्वा बार्वे को 21-15, 21-13 से हराकर उलटफेर किया। सेमीफाइनल में वह महाराष्ट्र की वैदेहि चौधरी से भिड़ेंगी जिन्होंने स्थानीय खिलाड़ी अश्मिता चालिहा को रोमांचक मुकाबले में 23-21, 9-21, 21-19 से पराजित किया।

चेन्नइयिन एफसी ने बेंगलुरू एफसी को 2-1 से हराया

बेंगलुरू। चेन्नइयिन एफसी ने यहां इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) के एक रोमांचक मुकाबले में मेजबान बेंगलुरू एफसी को 2-1 से शिकस्त दी। यहां के श्रीकांतीरावा स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में धनपाल गणेश द्वारा 88वें मिनट में किए गए गोल की बदौलत चेन्नयन एफसी ने अपने छठे राउंड रोबिन लीग मैच में बेंगलुरू को हराया। इससे पहले चेन्नइयिन के जेजे ने पांचवें मिनट में इस सीजन का सबसे तेज गोल करते हुये टीम को 1-0 की बढ़त दिला दी।

चेन्नइयिन ने इस बढ़त को 84 मिनट तक कायम रखा हालांकि बेंगलुरू ने 85वें मिनट में कप्तान सुनील छेत्री के गोल के दम पर बराबरी कर ली। धनपाल ने चेन्नइयिन के लिए दो मिनट बाद ही गोल करते हुए उसे पूरे तीन अंक दिला दिए। इस जीत के साथ चेन्नइयिन के छह मैचों में चार जीत और दो हार के साथ 12 अंक हो गए हैं, और वह तीसरे स्थान पर ही बनी हुई है। बेंगलुरू के भी 12 अंक हैं लेकिन वह गोलअंतर में चेन्नइयिन से आगे है और दूसरे स्थान पर कायम है। एफसी गोवा 12 अंकों और बेहतर गोल अंतर के साथ पहले स्थान पर है।

रोहित शर्मा आईसीसी रैंकिंग में पांचवें स्थान पर पहुंचे

दुबई (एजेंसी)।

भारत के सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा हाल ही में श्रीलंका के खिलाफ खत्म हुई तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला में करियर के तीसरे दोहरे शतक के दम पर आईसीसी की एकदिवसीय बल्लेबाजों की रैंकिंग में दो पायदान के सुधार के साथ पांचवें स्थान पर पहुंच गये। यह पहली बार है जब इस बल्लेबाज ने रैंकिंग में 800 अंकों का आंकड़ा पार किया है। रोहित की कप्तानी में भारत ने श्रृंखला 2-1 से अपने नाम की।

श्रृंखला के बाद रोहित के 816 अंक हैं। रोहित इससे पहले फरवरी 2016 में रैंकिंग में तीसरे स्थान पर पहुंचे थे। मोहाली में श्रीलंका के खिलाफ दूसरे वनडे में 208 रन की नाबाद पारी के बाद उनके 825 अंक हो गये थे जो उनके सर्वोच्च रेटिंग अंक हैं। रोहित के साथ भारतीय पारी का आगाज करने वाले मैन ऑफ द सीरीज रहे शिखर धवन भी एक स्थान के सुधार के साथ रैंकिंग में 14वें स्थान पर पहुंच गये। उन्होंने विशाखापत्तनम में आखिरी एकदिवसीय में नाबाद 100 रन के साथ श्रृंखला में कुल 168 रन बनाये। उन्होंने दूसरे मैच में 68 रन की पारी खेलने के साथ रोहित के साथ 115 रनों की साझेदारी भी की थी।

श्रृंखला में नहीं खेलने वाले भारतीय टीम के नियमित कप्तान विराट कोहली रैंकिंग में 876 अंकों के साथ पहले स्थान पर बने हुये हैं। दक्षिण अफ्रीका के एबी डिविलियर्स 872 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर हैं। श्रृंखला में छह विकेट झटकने वाले भारत के लेग स्पिनर युजवेन्द्र चहल 23 स्थान के सुधार के साथ गेंदबाजी रैंकिंग में 28वें स्थान पर पहुंच गये है। चाइनामैन गेंदबाज कुलदीप यादव 16 स्थान के सुधार के साथ करियर की सर्वश्रेष्ठ 56वीं रैंकिंग पर काबिज हैं। हरफनमौला हार्दिक पंड्या भी 10 स्थान की छलांग लगाकर करियर की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग 45वें स्थान पर आ गये।

श्रीलंका के सलामी बल्लेबाज उपुल थरंगा रैंकिंग में 15 स्थान ऊपर चढ़ते हुये 36वें नंबर पर आ गये। उनके 571 रेटिंग अंक हैं। निरोशन डिकवेला भी सात स्थान के सुधार के साथ 37वें स्थान पर है। टीमों की रैंकिंग में कोई बदलाव नहीं हुआ है। भारतीय टीम 119 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर बनी हुई है। भारत अगर श्रीलंका से यह श्रृंखला 3-0 से जीतता तो दक्षिण आफ्रीका (121 रेटिंग अंक) की जगह पहले स्थान पर आ जाता।

तीसरे टेस्ट में धमाकेदार जीत के साथ आस्ट्रेलिया ने एशेज अपने नाम की

पर्थ (एजेंसी)।

इंग्लैंड को वर्षाबाधित तीसरे टेस्ट के आखिरी दिन पारी के अंतर से हराकर आस्ट्रेलिया ने एशेज क्रिकेट श्रृंखला अपने नाम कर ली। मैच का रूख तय करने वाला दोहरा शतक जमाकर दुनिया के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज के रूप में फिर खुद को स्थापित कर चुके कप्तान स्टीव स्मिथ ने अपनी उपलब्धियों में एशेज खिताब भी जोड़ लिया। इंग्लैंड की टीम दूसरी पारी में आज 218 रन पर आउट हो गई जिससे आस्ट्रेलिया ने एक पारी और 41 रन से जीत दर्ज की। इसके साथ ही पांच मैचों की श्रृंखला में आस्ट्रेलिया की बढत 3-0 की हो गई। उसने ब्रिसबेन और एडीलेड टेस्ट भी जीता था।

पैट कमिंस ने क्रिस वोक्स को 22 के स्कोर पर आउट करके जीत की औपचारिकता पूरी की। पांचवें दिन हालांकि काफी नाटकीयता देखने को मिली और वाका की पिच के साथ एक विवाद और जुड़ गया। आस्ट्रेलिया ने कल ही इंग्लैंड के चार विकेट 132 रन पर गिरा दिये थे। इंग्लैंड को पारी की हार से बचने के लिये आज 127 रन और बनाने थे जबकि उसके आठ विकेट की बाकी थे।

बारिश के कारण लंच से पहले एक भी गेंद नहीं फेंकी जा सकी। इसके बाद मैदान के दक्षिणी छोर की क्रीज के पास पिच के एक हिस्से पर काफी नमी देखी गई। वाका के मैदानकर्मियों ने पिच को सुखाने की काफी कोशिशें की लेकिन बार बार बारिश के कारण उनके काम में खलल पड़ा। खेल फिर शुरू होने के बाद टूटती पिच पर गेंद खतरनाक ढंग से उछाल ले रही थी। ऐसे में विकेट लगातार गिरते रहे और पहली पारी के शतकवीर जानी बेयरस्टा सिर्फ14 रन ही बना सके। डेविड मालान 54 रन बनाकर पवेलियन लौट गए।

ट्वेंटी -20 सीरीज खेलने लिए भारत-श्रीलंका की टीमें पहुंची ओडिशा

भुवनेश्वर (एजेंसी)।

भारत और श्रीलंका की क्रिकेट टीम तीन मैचों की ट्वेंटी -20 सीरीज के पहले मैच के लिए सोमवार को ओडिशा पहुंच गयीं। दोनों टीमों के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज संपन्न हुई थी जहां मेजबान टीम 2-1 से विजेता रही।

ट्वेंटी -20 सीरीज का पहला मैच 20 दिसंबर को कटक के बाराबती स्टेडियम में खेला जाएगा। दोनों टीमों के खिलाड़ी विशाखापत्तनम से एक विशेष विमान से यहां बीजू पटनायक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा पहुंचे जहां से उन्हें कड़ी सुरक्षा के बीच एक होटल ले जाया गया। तय कार्यक्रम के अनुसार दोनों टीमें मंगलवार को अभ्यास करेंगी। यहां होटल में खिलाड़ियों, स्पोर्टिंग स्टाफ और मैच अधिकारियों के लिए 50 से अधिक कमरे बुक किये गये हैं। पुलिस सूत्रों ने कहा कि भुवनेश्वर और कटक में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। इसके अलावा बाराबती स्टेडियम में पुलिस की 68 और भुवनेश्वर में 25 टुकड़ियां तैनात की गई है। उन्होंने कहा कि सुरक्षा की द्रष्टि से स्टेडियम के गेट तीन बजे के बाद ही दर्शकों के लिए खोले जाएंगे। वहीं मैच के दौरान स्टेडियम में पानी की बोतलें और पाऊच ले जाने पर प्रतिबंध रहेगा।

मेरी और कुलदीप की अश्विन-जडेजा से तुलना ठीक नहीं : चहल

विशाखापानम (एजेंसी)।

भारतीय लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल का मानना है कि उनकी और कुलदीप यादव की रविचंद्रन अश्विन और रविंद्र जडेजा से तुलना करना अच्छा नहीं होगा क्योंकि इस जोड़ी ने पिछले कुछ वर्षों में खुद को साबित किया है। भारत की श्रीलंका के खिलाफ तीसरे वनडे में आठ विकेट से जीत के बाद चहल ने कहा, ''अश्विन और जडेजा ने पिछले पांच-छह वर्षों में काफी कुछ किया है। हमने केवल चार-पांच श्रृंखलाएं खेली हैं। मेरी और कुलदीप की तुलना उनसे करना सही नहीं होगा। ''उन्होंने कहा, ''जब हम मैदान पर उतरते हैं तो हमारा लक्ष्य अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होता है। अगर आप अभी से उनसे तुलना करना शुरू कर देंगे तो यह अच्छा नहीं होगा। हमने अपने अधिकतर मैच भारत में खेले हैं। एक श्रृंखला श्रीलंका में खेली है लेकिन वहां भी परिस्थितियां भारत जैसी ही हैं। हम विदेशों में नहीं खेले हैं। ''

जिम्बाब्वे के खिलाफ होने वाले डे-नाइट टेस्ट में डु प्लेसिस का खेलना संदिग्ध

जोहानसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका के टेस्ट कप्तान फाफ डु प्लेसिस का कंधे की चोट के कारण पोर्ट एलिजाबेथ में जिम्बाब्वे के खिलाफ होने वाले पहले चार दिवसीय डे नाइट टेस्ट में खेलना संदिग्ध माना जा रहा है। 33 वर्षीय डु प्लेसिस गत अक्टूबर में बंगलादेश के खिलाफ दूसरे वनडे में चोटिल हो गए थे और उन्हें छह सप्ताह के आराम की सलाह दी गई थी। उसके बाद से उन्होंने एक भी मैच नहीं खेला है। दक्षिण अफ्रीका के टीम मैनेजर मोहम्मद मूसाजी ने कहा, डु प्लेसिस को जिम्बाब्वे के खिलाफ टेस्ट टीम में शामिल किया गया है लेकिन यह अभी तय नहीं हो पाया है कि वह खेलेंगे या नहीं। हम उनके खेलने को लेकर आश्वस्त नहीं है क्योंकि आगे उन्हें अभी बहुत क्रिकेट खेलना है।

एक ओवर में दो विकेट से हमें झटका लगा : पोथास

विशाखापट्टनम। श्रीलंका के कोच निक पोथास ने कहा कि 28वें ओवर में दो विकेट आसानी से गंवाने के बाद उनकी टीम बैकफुट पर आ गयी जबकि इससे पहले भारत के खिलाफ तीसरे वनडे में वह अच्छी स्थिति में थी। पोथास ने श्रीलंका की आठ विकेट से हार के बाद कहा, ''हम 28वें ओवर तक मैच में काफी अच्छी स्थिति में थे। इसके बाद एक ओवर में दो विकेट (थरंगा और डिकवेला) निकल गये और इसके बाद टीम बैकफुट पर आ गयी। यह बेहद निराशाजनक है। ''उन्होंने कहा कि टीम की रणनीति सही थी लेकिन एक ओवर में दो विकेट गंवाने से टीम को झटका लगा। पोथास ने कहा, ''हम एक रणनीति के साथ मैदान पर उतरे थे। हमने टीम में स्पिनरों को अच्छी तरह से खेलने वाले अधिक से अधिक खिलाड़ियों को रखा। अगर आप भारत से खेलना चाहते हो तो टीम में मध्यक्रम में ऐसे खिलाड़ी होने चाहिए जो स्पिन को अच्छी तरह से खेलें। रणनीति अच्छी थी लेकिन हम एक ओवर में दो विकेट गंवा बैठे और इससे हम पिछड़ गये।''

श्रीलंका ने पिछले दोनों मैच बड़े अंतर से गंवाये लेकिन पोथास ने कहा कि खिलाड़ी तेजी से नहीं सीख पा रहे हैं। उन्होंने कहा, ''अगर हम अपने वनडे क्रिकेट पर गौर करें तो मैं कहूंगा कि हम तेजी से नहीं सीख रहे हैं। टेस्ट मैचों में हालांकि मामला इसके विपरीत है। वहां खिलाड़ियों ने बहुत जल्दी सीखा और परिस्थितियों से सामंजस्य बिठाया।'' उन्होंने कहा,'' वनडे में हम कुछ गलतियां लगातार कर रहे हैं। इसलिए इसे मैं नये कोच और चयनकर्ताओं पर छोड़ता हूं। मैं अपने सुझाव दूंगा लेकिन अगर आप वही गलती दोहराते रहोगे तो फिर यह मुश्किल है।

भारोत्तोलन में बेदाग रहे 2017 में चानू ने जोड़ा सुनहरा अध्याय

नयी दिल्ली (एजेंसी)।

पिछले चार साल में 45 डोप टेस्ट झेल चुकी मीराबाई चानू ने वर्ष 2017 में सफलता का नया अध्याय जोड़ा जबकि अतीत में डोप विवादों के कारण विश्वसनीयता खो चुके भारतीय भारोत्तोलन के लिये बीता साल बेदाग रहा। मणिपुर की 23 बरस की चानू ने पिछले दो दशक में देश को विश्व चैम्पियनशिप में पहला स्वर्ण पदक दिलाया। चानू ने 30 नवंबर को अमेरिका के अनाहेम में विश्व चैम्पियनशिप में महिलाओं के 48 किलो वर्ग में स्वर्ण जीता। वह कर्णम मल्लेश्वरी के बाद यह उपलब्धि हासिल करने वाली पहली भारतीय भारोत्तोलक बनी। मल्लेश्वरी ने 1994 और 1995 में पीला तमगा जीता था।

चानू को भी विश्व चैम्पियनशिप से लौटने के बाद दो दिन के भीतर दो डोप टेस्ट से गुजरना पड़ा। चानू की पिछले साल रियो ओलंपिक की कड़वी यादों को हालांकि विश्व चैम्पियनशिप के इस पदक ने मिटा दिया होगा। उसने 194 किलो का अपना राष्ट्रीय रिकार्ड बेहतर किया और आगे उनसे अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद बंधी है। मौजूदा राष्ट्रमंडल चैम्पियन चानू की स्वर्ण पदक की राह हालांकि आसान नहीं थी। एक साल पहले ही रियो ओलंपिक में पदक नहीं जीत पाने के कारण आलोचना झेलने वाली चानू को खेल को अलविदा कहने का मन बना लिया था।

उसने उस निराशा से उबरते हुए नये सिरे से शुरूआत की और आखिर उसकी मेहनत रंग लाई। रियो में नाकामी के बाद घंटों कड़ा अभ्यास करने वाली चानू अपनी बहन की शादी में भी नहीं जा सकी थी चूंकि उसी दौरान उसे एक चैम्पियनशिप खेलनी थी। इतनी कुर्बानियों के बाद पदक मिलने पर आंसू छलकना स्वाभाविक था। यह उस तनाव की सुखद परिणिति थी जो 20 दिन में चार और कैरियर में वाडा और नाडा के 45 डोप टेस्ट झेलने के कारण उसे मिला। चानू ने कहा, '' पिछले दो साल में मैने इतने टेस्ट दिये लेकिन कभी कुछ नहीं निकला। मुझसे जब भी नमूने मांगे गए, मैने दिये। मेरे पास छिपाने के लिये कुछ नहीं है। मेरी चिंता सिर्फ प्रशिक्षण और अगले साल राष्ट्रमंडल तथा एशियाई खेलों में अच्छा प्रदर्शन है।''

भारत विश्व डोपिंग निरोधक एजेंसी की वैश्विक डोपिंग उल्लंघन रिपोर्ट में लगातार तीसरे साल तीसरे स्थान पर रहा। इस दौरान 117 खिलाड़ी प्रतिबंधित दवाओं के सेवन के दोषी पाये गए और सबसे ज्यादा 56 भारोत्तोलक थे। पिछला साल भले ही इस खेल में चानू की उपलब्धि के नाम रहा हो लेकिन 16 भारतीय भारोत्तोलकों ने आस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट में होने वाले 2018 राष्ट्रमंडल खेलों में जगह बनाई।

सूरत। विजय पाने वाले प्रत्यासी अपने समर्थकों के साथ कुछ यू नजर आए शहर की सड़कों पर। शहर की 12 विधान सभा सीटों पर भाजपा एक बार फिर जीत का परचम लहरा कर यह साबित कर दिया कि आज भी शहरी मतदाताओं में भाजपा के प्रति लगाव है।

नहीं चला हार्दिक अल्पेश और जिग्नेश का जादू

अहमदाबाद (ईएमएस)। गुजरात के चुनावी नतीजों से स्पष्ट है कि वहां हार्दिक पटेल, जिग्नेश मेवाणी और अल्पेश ठाकुर की तिकड़ी पर भरोसा करने से इंकार कर दिया। हार्दिक पटेल, जिग्नेश मेवाणी और अल्पेश ठाकोर की तिकड़ी कांग्रेस पार्टी के पक्ष में हवा बनाने की कोशिश कर रही थी। लेकिन नतीजों में मोदी के पक्ष में हवा दिखी है। कांग्रेस के अध्यक्ष राहुल गांधी आंदोलन से निकले नेता जिग्नेश मेवाणी अल्पेश ठाकुर और हार्दिक पटेल के दम पर गुजरात में सरकार बनाने का सपना देख रहे थे। लेकिन यह सपना पूरा नहीं हो सका। हालांकि कांग्रेस पार्टी की सीटों की संख्या में जरूर इजाफा हुआ है। हार्दिक पटेल गुजरात में पाटीदार समुदाय के एक बड़े नेता के रूप में उभरे हैं। वहीं अल्पेश ठाकोर की पहचान राज्य में सामाजिक कार्यकर्ता की है। वह ओबीसी के बड़े नेता हैं। वहीं जिग्नेश मेवाणी दलित समुदाय से ताल्लुक रखते हैं। तीनों की मदद के जरिए कांग्रेस ने राज्य में सत्ता के समीकरण नए सिरे से बनाने की कोशिश की थी, लेकिन कांग्रेस का यह प्रयास नाकाम हो गया है।

कांग्रेस की बोली बोल रहे हार्दिक: पैसा और ईवीएम से जीती भाजपा

अहमदाबाद (ईएमएस)। गुजरात चुनाव में कांग्रेस की सीटों को बढ़ने में अहम रोल अदा करने में पाटीदार नेता हार्दिक पटेल ने चुनाव परिणाम के बाद कांग्रेस की तरह इसी जीत को इवीएम की जीत बताया। हार्दिक पटेल ने सोमवार को गुजरात विधानसभा चुनाव में बीजेपी की जीत पर निशाना साधते हुए कहा कि जब एटीएम हैक हो सकता है तो ईवीएम क्यों नहीं हैक हो सकता है? उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी ने पैसे के जोर पर यह जीत हासिल की है। हार्दिक ने सोमवार को कहा कि 12-15 सीटों पर हार-जीत का अंतर 200-1000 वोटों का रहा है। जिस ईवीएम के अंदर फिर से गिनती हुई है, वहीं चेंज आए हैं। ईवीएम टैंपरिंग एक बड़ा मुद्दा है। उन्होंने बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह पर अप्रत्यक्ष रूप से निशाना साधते हुए कहा कि यह किसी चाणक्य की जीत नहीं है।' पाटीदार नेता ने कहा, 'सूरत, अहमदाबाद और राजकोट के अंदर बीजेपी की जीत आश्चर्य पैदा कर रही है। बीजेपी ने जान बूझकर यह आंकड़ा रखा है ताकि कोई ईवीएम पर शक नहीं कर सके।' अपना आंदोलन जारी रखने की बात कहते हुए हार्दिक ने कहा, 'हमारा आंदोलन जारी रहेगा। आंदोलन हमारे स्वार्थ के लिए नहीं था। मैं एक आंदोलनकारी हूं। मैंने बीजेपी के खिलाफ काम किया। हम लड़ रहे थे आगे भी भाजपा के खिलाफ लड़ेते रहेंगे। अभी मैं 23 साल का हूं और अपने राजनीतिक भविष्य की बात आगे करेंगे।

चुनावों में हार पर बोले राहुल, 'नतीजों से निराश नहीं, शालीनता ही कांग्रेस की ताकत'

अहमदाबाद। गुजरात में मिली करारी हार के बाद कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वह इस हार से निराश नहीं हैं। राहुल गांधी ने ये बातें संसद में पार्टी सांसदों के साथ मुलाकात के दौरान कही। मीडिया रिपोर्टस के मुताबिक, राहुल गांधी ने संसद परिसर में कांग्रेसी सांसदों से मुलाकात करते हुए कहा कि गुजरात और हिमाचल प्रदेश में मिली हार से हमें निराश नहीं होना चाहिए।

राहुल गांधी ने दोपहर बाद ट्वीट करते हुए कि कांग्रेस जनता के फैसले को स्वीकार करती है और दोनों राज्यों की नई सरकार को बधाई देती है। उन्होंने गुजरात और हिमाचल की जनता को धन्यवाद देते हुए कहा कि वह दोनों प्रदेश की जनता का दिल से शुक्रिया अदा करते हैं। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं का जिक्र करते हुए कहा, कांग्रेस के भाइयों तथा बहनों, आपने मेरा मान बढ़ाया है। आपने इस लड़ाई में बड़ी ही शालीनता के साथ गुस्से का सामना किया। आपने बता दिया कि कांग्रेस की सबसे बड़ी ताकत उसकी शालीनता और साहस है। बता दें कि राहुल गांधी ने अकेले ही गुजरात और हिमाचल प्रदेश में चुनाव प्रचार की कमान संभाली थी और इसके लिए दिन-रात एक करते हुए कड़ी मेहनत भी की। राहुल के सामने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह समेत बीजेपी के तमाम दिग्गज मैदान में थे।

वडगाम सीट पर जीते जिग्नेश मेवाणी, 19 हजार से ज्यादा वोटों से बीजेपी को हराया

अहमदाबाद। गुजरात विधानसभा चुनाव के नतीजे आने लगे हैं। राज्य की चर्चित सीटों में शुमार वडगाम सीट से निर्दलीय उम्मीदवार जिग्नेश मेवाणी ने 19696 वोटों से अपने निकटतम प्रतिद्वंदी बीजेपी के विजय चक्रवर्ती को पराजित कर दिया है। गुजरात में पिछला एक वर्ष उथल-पुथल भरा रहा। हार्दिक पटेल के पाटीदार आंदोलन के बाद दलित आंदोलन ने रूपानी सरकार को खासा परेशान किया। इसी बीच एक दलित नेता का नाम मीडिया में उभरा वो जिग्नेश मेवाणी ही थे। जिग्नेश गुजरात की राजनीति 'तिकड़ी' के सदस्य हैं। कांग्रेस ने हार्दिक के साथ-साथ जिग्नेश को भी अपने साथ जोड़ने की कोशिश की थी लेकिन उन्होंने चुनाव लड़ने को लेकर शुरुआत में कोई प्रतिबद्धता नहीं दिखाई। बाद में 27 नवंबर को मेवाणी ने चुनावी समर में कूदने की घोषणा कर दी। कांग्रेस ने उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए अपना उम्मीदवार मेवाणी के सामने नहीं उतारा।

जिग्नेश मेवाणी बनासकांठा जिले की वडगाम सीट से चुनाव लड़ रहे थे। वडगाम सीट पर पिछले चुनावों में कांग्रेस का कब्जा था। मेवाणी के चुनाव लड़ने पर कांग्रेस ने अपने वर्तमान विधायक मणिभाई वाघेला को चुनाव नहीं लड़ने का निर्देश दिया था। जिग्नेश मेवाणी को आम आदमी पार्टी ने भी समर्थन देने का ऐलान किया था। उधर, बीजेपी ने इस सीट से विजय चक्रवर्ती को उम्मीदवार बनाया था।

वडगाम एससी सुरक्षति सीट है। इस सीट को कांग्रेस का गढ़ माना जाता है। पिछले चार में से तीन चुनाव कांग्रेस ने यहां से जीते हैं। सिर्फ 2007 में बीजेपी को इस सीट पर जीत मिली थी। 2011 की जनगणना के मुताबिक वडगाम की कुल जनसंख्या तकरीबन ढाई लाख के आस-पास है जिसमें 16 ।2 प्रतिशत एससी और 25 ।3 प्रतिशत मुस्लिमों की संख्या है। ये दोनों ही कांग्रेस के कोर वोटर रहे हैं। 2012 के विधानसभा चुनाव में यहां से कांग्रेस के मणिराम वाघेला ने 90000 के बड़े अंतर से जीत हासिल की थी।

गुजरात चुनाव: नहीं टूटा मिथक, दो सीटों पर बीजेपी को कभी नसीब नहीं हुई जीत

नई दिल्ली। गुजरात विधानसभा चुनाव की तस्वीर लगभग साफ हो चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने गढ़ को बचा लिया है। गुजरात चुनाव में कई मिथक हैं जो बरकरार रहे। एक मिथक यह है कि गुजरात में 2 विधानसभा सीटें ऐसी हैं जिस पर बीजेपी को एक उपचुनाव को छोड़कर कभी भी जीत नहीं दर्ज कर पाई। ये दो सीटें है - राजकोट जिले की जसदण और तापी की व्यारा सीट। इन सीटों का इतिहास रहा है कि यहां से गैर-भाजपा उम्मीदवार ही जीते हैं। बीते 52 सालों में हुए 14 चुनावों में बीजेपी को यहां के वोटरों का आशीर्वाद नहीं मिला। इस बार भी बीजेपी को यहां से हार मिली। जसदण सीट से जसदण सीट से कांग्रेस के कुंवरजी मोहनभाई बावलिया ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी बीजेपी के भरत बोघरा को 9277 मतों से शिकस्त दी। जबकि व्यारा सीट से कांग्रेस के पुनाभाई गामित ने बीजेपी प्रत्याशी अरविंद चौधरी को हरा दिया।

बीजेपी ने जसदन और व्यारा पर जीत हासिल करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह दोनों की रैलियां इन विधानसभाओं में रखी गई थीं लेकिन सफलता नहीं मिली। कहा जा सकता है कि पीएम मोदी का जादू इन दो सीटों पर बिल्कुल नहीं चला।

जसदण से बीजेपी का न जीतना इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि इस सीट पर मुस्लिम आबादी राज्य के औसतन 12 फीसदी की तुलना में महज 2 ।5 फीसदी ही है। गुजरात चुनाव के इतिहास में भाजपा इस सीट पर केवल एक बार, वो भी उपचुनाव में, (पूर्ण चुनाव में नहीं) जीत दर्ज कर पाई है। 1962 से अब तक 14 बार चुनाव हुए हैं, भाजपा सिर्फ 2009 का उपचुनाव ही जीत पाई।

व्यारा सीट पर बीजेपी का अब तक खाता नहीं खुला। एसटी सीट पर शुरू से कांग्रेस का कब्जा रहा है। इस बार भाजपा ने अरविंद चौधरी को चुनावी मैदान में उतारा था लेकिन वह जनता का भरोसा हासिल नहीं कर सके। कांग्रेस से पुनाभाई गामित ने जीत दर्जकर मिथक को बरकरार रखा।

भारत कांग्रेसमुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ रहा है : वसुंधरा राजे

अहमदाबाद। मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने गुजरात और हिमाचल विधानसभा चुनाव में संभावित जीत की तरफ बढ़ रही भाजपा के प्रदर्शन पर कहा कि यह जीत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व और राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के संगठन कौशल की जीत है। जनता ने एक बार फिर विकास पर मुहर लगाई है। इधर, गुजरात और हिमाचल प्रदेश में भाजपा प्रदेश मुख्यालय में जश्न का माहौल रहा। पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों के बीच एक दूसरे को मिठाई खिलाकर जीत की बधाई दी।

राजे ने कहा कि गुजरात की जनता ने लगातार छठी बार भाजपा नेतृत्व में जो आस्था और विश्वास व्यक्त किया है उससे साबित हो गया है कि आज देश में इसका कोई विकल्प नहीं है। दूसरी ओर, हिमाचल प्रदेश की जीत ने सिद्ध कर दिया है कि भारत कांग्रेस मुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा कि राजस्थान में आने वाले सभी चुनावों में भी हम एक बार फिर जनता का अभूतपूर्व समर्थन हासिल करेंगे और सरकार बनाएंगे। उन्होंने गुजरात और हिमाचल की जनता को बधाई दी और उनका आभार व्यक्त किया।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी ने कहा कि गुजरात में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के नेतृत्व का परिणाम आप सभी के सामने है गुजरात एवं हिमाचल प्रदेश की जनता का आभार, जिन्होंने मत देकर भाजपा में विश्वास व्यक्त किया।

उन्होंने कांग्रेस के गुजरात प्रभारी अशोक गहलोत के ईवीएम से छेड़छाड़ के बयान पर चुटकी लेते हुए कहा कि गहलोत को लोकतंत्र पर भरोसा रखना चाहिए। उन्हें जनता पर भी भरोसा रखना चाहिए क्योंकि जनता ही सरकार बनाती है और जनता ही सरकार हटाती है। चुनाव आयोग पर काँग्रेस का आरोप लगाना लोकतंत्र में उचित नहीं है।

पायलट ने गुजरात और हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव परिणाम पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि भाजपा के बडे दावों की पोल खुली गयी है। भाजपा ने विधानसभा चुनाव में सरकारी मशीनरी का खुलकर दुरूपयोग किया, पाकिस्तान और हाफिज सईद के मामले बेवजह उठाकर मतदाताओं को भ्रमित करने का काम किया। पायलट ने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी चुनाव के शुरू से ही जनता से जुड़े मुद्दों को उठाकर कथित विकास के दावों को लेकर आक्रामक रहे।

गुजरात चुनाव के शुरूआती रूझानों के बाद कांग्रेस के बढ़त लेने पर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में अचानक पार्टी कार्यकर्ताओं का जमावडा होना शुरू हो गया, लेकिन कुछ देर बाद यह सिलसिला थम गया।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा तासीलोक पब्लिकेशन 152,153 श्री राम इंडस्ट्रीयल एरिया पांडेसरा सूरत 394210 से मुद्रत, एवं 4 ओ-ब्लाक आगम नवकार कॉम्पलेक्ष सचीन रेल्वे स्टेश के पास, सूरत, जि. सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **Tc.No. : GUJHIN00722**, E-mail: krantisamay@gmail.com